

एकीकृत खेती प्रणाली में फसलों की खेती

1. प्रस्तावना

एकीकृत खेती प्रणाली कृषि की एक ऐसी आधुनिक एवं टिकाऊ पद्धति है, जिसमें फसल उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन, डेयरी, मुर्गी पालन, मछली पालन, बागवानी, सब्जी उत्पादन की गतिविधियों को एक-दूसरे से जोड़कर किया जाता है। इस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य उपलब्ध भूमि, जल, श्रम और कृषि अवशेषों का अधिकतम एवं उचित उपयोग करना है। इससे किसान की आय में वृद्धि होती है तथा खेती की लागत को कम किया जा सकता है।

2. एकीकृत खेती प्रणाली का अर्थ

फसलों के साथ-साथ बागवानी, पशुपालन कृषि वानिकी तथा मत्स्य पालन/ मधुमक्खी पालन को एक साथ अपने खेत पर नियोजित करना एकीकृत खेती प्रणाली कहलाता है।

3. खाद्यान फसलों की खेती

एकीकृत खेती प्रणाली में फसलों का चयन स्थानीय जलवायु, मिट्टी, सिंचाई की सुविधा और बाजार की मांग को ध्यान में रखकर किया जाता है। खाद्यान फसलों के साथ-साथ तिलहन, सब्जियों तथा चारे वाली फसलों की खेती को अपने खेत पर खरीफ एवं रबी दोनों सीजन में देना चाहिए।

4. फसल चक्र का महत्व

खेती प्रणाली में फसल चक्र अपनाना बहुत महत्वपूर्ण होता है। अलग-अलग मौसम में अलग-अलग फसलों की खेती करने से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और पोषक तत्वों का संतुलित उपयोग होता है। गहरी जड़ वाली फसल के उपरांत, झकड़ा जड़ वाली फसले दोनों फसल चक्र का मुख्य सिद्धांत होता है।

दलहनी फसलों को फसल चक्र में शामिल करने से मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ाने में सहायता मिलती है। इससे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम की जा सकती है और खेती अधिक टिकाऊ बनती है।

5. फसल एवं पशुपालन का समन्वय

एकीकृत खेती प्रणाली में फसल उत्पादन और पशुपालन को आपस में जोड़ा जाता है। खेत से प्राप्त भूसा, पुआल और अन्य फसल अवशेषों का उपयोग पशुओं के चारे के रूप में किया जा सकता है। दूसरी ओर, पशुओं से प्राप्त गोबर और अन्य जैविक पदार्थों से खाद तैयार करके खेत में डाली जा सकती है।

इस प्रकार फसल और पशुपालन एक-दूसरे के पूरक बन जाते हैं तथा किसान को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।

6. जैविक खाद का उपयोग

एकीकृत खेती प्रणाली में जैविक खाद का विशेष महत्व है। पशुओं के गोबर, फसल अवशेष और अन्य जैविक पदार्थों से कम्पोस्ट तथा वर्मी कम्पोस्ट तैयार किया जा सकता है। इसका उपयोग खेत की मिट्टी में जैविक पदार्थ बढ़ाने और उसकी संरचना सुधारने के लिए किया जाता है।

जैविक खाद के प्रयोग से मिट्टी की जल धारण क्षमता और उर्वरता में सुधार होता है।

7. एकीकृत खेती प्रणाली के प्रमुख लाभ

1. किसान की आय के अनेक स्रोत विकसित होते हैं।
2. खेती की कुल लागत को कम करने में सहायता मिलती है।

3. कृषि अवशेषों का उचित उपयोग किया जाता है।
4. मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में सहायता मिलती है।
5. पशुपालन और फसल उत्पादन के बीच बेहतर समन्वय स्थापित होता है।
6. प्राकृतिक संसाधनों का अधिक प्रभावी उपयोग होता है।
7. किसान को वर्षभर रोजगार एवं आय के अवसर मिलते हैं।
8. किसी एक फसल के खराब होने पर आर्थिक जोखिम कम हो जाता है।
9. जैविक खाद के उपयोग से रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम की जा सकती है।
10. यह कृषि को अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल बनाने में सहायता करती है।

8. किसानों के लिए उपयोगिता

एकीकृत खेती प्रणाली छोटे और सीमांत किसानों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। सीमित भूमि पर केवल एक फसल पर निर्भर रहने के बजाय किसान फसल उत्पादन के साथ पशुपालन, सब्जी उत्पादन, बागवानी और अन्य गतिविधियां अपनाकर अपनी आय के स्रोत बढ़ा सकता है।

इस प्रणाली से उपलब्ध श्रम, पानी, भूमि और कृषि अवशेषों का बेहतर उपयोग होता है।

9. निष्कर्ष

एकीकृत खेती प्रणाली कृषि को अधिक लाभकारी, टिकाऊ और संसाधन-कुशल बनाने की महत्वपूर्ण पद्धति है। इसमें फसल उत्पादन को पशुपालन, बागवानी, मछली पालन तथा अन्य कृषि गतिविधियों से जोड़कर उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाता है। फसल अवशेषों और पशु अपशिष्ट का पुनःउपयोग करने से खेती की लागत कम करने तथा मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में सहायता मिलती है।

इसलिए किसानों की आय बढ़ाने, कृषि जोखिम कम करने और टिकाऊ कृषि विकास को बढ़ावा देने के लिए एकीकृत खेती प्रणाली को अपनाना एक प्रभावी विकल्प है।